Visit of Shri Sandeep Sarkar, Additional Secretary, DARE and Financial Advisor, ICAR to ICAR-CIFE Rohtak Centre

ICAR-CIFE Rohtak Centre, Lahli, Haryana, organized a "Technology Demonstration and Farmers' Interaction Programme" on 13 November 2026. The programme was graced by Shri Sandeep Sarkar, Additional Secretary, DARE and Financial Advisor, ICAR; Dr. Devika Pillai, ADG (Inland Fisheries), ICAR, New Delhi; Shri Pawan Kumar, Director Fisheries, Government of Haryana; and Dr. N. P. Sahu, Director, ICAR-CIFE, Mumbai. The programme aimed to demonstrate inland saline aquaculture technologies developed and promoted by the Centre and to facilitate interaction among farmers and officials and of different departments related to fisheries. A total of 100 participants attended the programme, including dignitaries, farmers, students and staff of the Centre, officials from the State Fisheries Department, faculty members from Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (CCS HAU), Hisar, District Development Managers (DDM) from the National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD), and officials from the Central Public Works Department (CPWD).

The dignitaries were accorded a warm welcome at the Centre and introduced to the scientists, representatives of the State Fisheries Departments and participating farmers. The visit began with a tour of the common carp rearing ponds at Lahli Farm, where the dignitaries were briefed on the breeding and seed production activities and the significance of genetically improved common carp seed in enhancing fish production. Subsequently, they witnessed the harvesting of *Penaeus vannamei* from a rearing pond, showcasing the inland saline shrimp farming activities undertaken at the Centre.

The dignitaries also visited the Nucleus Breeding Centre (NBC) for common carp at Baniyani Farm, where the fish tagging procedure was demonstrated to familiarise them with the broodstock identification and monitoring process. The dignitaries visited the laboratory complex, where they were apprised of the available facilities and ongoing research activities.

The formal farmers' interaction programme was held in the conference room. The programme commenced with an invocation song by CIFE students, followed by the lighting of the ceremonial lamp. Dr. N. P. Sahu delivered the welcome address. Dr. M. A. Pathan, Officer-in-Charge, ICAR-CIFE Rohtak Centre, presented an overview of the Centre's activities, followed by a presentation by Dr. Satya Prakash, Scientist, ICAR-CIFE Rohtak Centre, on the technologies developed by the Centre for inland saline aquaculture (ISA).

During the programme, the Chief Guest distributed genetically improved common carp seed to the farmers. In his address, he highlighted the importance of innovation in the fisheries sector, the need to promote local fish consumption to enhance market demand and the role of private enterprises in strengthening the sector. Shri Pawan Kumar provided a valuable input on schemes of fisheries department, entrepreneurship model of PMMSY as well as co-operative society model to obtain more benefits by the farmers. Dr. Devika Pillai highlighted the importance of adopting a cluster-based farming approach to optimize and reduce the costs associated with laboratory testing. She also emphasized the potential of inland saline aquaculture and the need to promote its expansion through a cautious and scientifically guided approach. Further, she briefed the farmers on EHP disease and stressed the importance of disease management and maintaining high-quality produce to meet international export standards. The programme also featured an interactive session involving farmers, stakeholders, officials of the State Fisheries Department and scientists, during which

farmers raised their queries and shared field-level challenges, which were discussed by the experts. The programme concluded with a vote of thanks delivered by Dr. Sreedharan K., Senior Scientist, ICAR-CIFE Rohtak Centre, followed by the National Anthem.

श्री संदीप सरकार, अपर सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) एवं भा.कृ.अनु.प. के वित्तीय सलाहकार का भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के रोहतक केंद्र का दौरा

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान के रोहतक केंद्र ने 13 नवंबर 2026 को एक "प्रौद्योगिकी प्रदर्शन और किसान संवाद कार्यक्रम" का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में डेयर के अपर सचिव एवं भा.कृ.अनु.प. के वित्तीय सलाहकार श्री संदीप सरकार; भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली की सहायक महानिदेशक (अंत:स्थलीय मात्स्यिकी) डॉ. देविका पिल्लई; हरियाणा सरकार के मात्स्यिकी निदेशक श्री पवन कुमार; और भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई के निदेशक डॉ. एन. पी. साहू उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य केंद्र द्वारा विकसित और प्रचारित अंत:स्थलीय लवणीय जलकृषि तकनीकों का प्रदर्शन करना तथा किसानों और मत्स्य पालन से जुड़े विभिन्न विभागों के अधिकारियों के बीच संवाद को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम में कुल 100 लोगों ने भाग लिया, जिनमें कई गणमान्य व्यक्ति, किसान, छात्र, केंद्र के कर्मचारी, राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारी, हिसार स्थित चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य, नाबार्ड के जिला विकास प्रबंधक और केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के अधिकारी शामिल थे।

केंद्र में अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया गया और उन्हें वैज्ञानिकों, राज्य मत्स्य विभागों के प्रतिनिधियों तथा प्रतिभागी किसानों से परिचय करवाया गया। इस दौरे की शुरुआत लाहली फार्म में 'कॉमन कार्प' मछली-पालन तालाबों के निरीक्षण से हुई, जहाँ अतिथियों को मछली के प्रजनन, बीज उत्पादन और मछली उत्पादन बढ़ाने में आनुवंशिक रूप से उन्नत 'कॉमन कार्प' बीजों के महत्व के बारे में जानकारी दी गई। इसके बाद, उन्होंने झींगा-पालन तालाब से झींगे के प्रग्रहण कार्य देखा, जो केंद्र द्वारा की जा रही अंतरस्थलीय खारे पानी में झींगा-पालन गतिविधियों को दर्शाता है।

विशिष्ट अतिथियों ने बनियानी फार्म स्थित केंद्रक प्रजनन केंद्र का भी दौरा किया, जहाँ उन्हें 'फिश टैगिंग' (मछलियों पर पहचान चिह्न लगाने) की प्रक्रिया दिखाई गई, ताकि वे 'ब्रूडस्टॉक' (प्रजनन के लिए रखी गई मछलियों) की पहचान और उनकी निगरानी के तरीकों को समझ सकें। अतिथियों ने प्रयोगशाला परिसर का भी दौरा किया, जहाँ उन्हें वहाँ मौजूद सुविधाओं और चल रहे शोध कार्यों के बारे में जानकारी दी गई।

किसानों के साथ औपचारिक संवाद कार्यक्रम सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान के छात्रों द्वारा गाए गए प्रार्थना गीत से हुई, जिसके बाद दीप प्रज्वलित किया गया। डॉ. एन. पी. साहू ने स्वागत भाषण दिया। भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं. के रोहतक केंद्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. एम. ए. पठान ने केंद्र की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया। इसके बाद केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. सत्य प्रकाश ने अंतर्स्थलीय खारा पानी में मछली पालन पर केंद्र द्वारा विकसित तकनीकों के बारे में प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के दौरान, मुख्य अतिथि ने किसानों को आनुवंशिक रूप से उन्नत 'कॉमन कार्प' मछली के बीज वितरित किए। अपने संबोधन में, उन्होंने मत्स्य पालन क्षेत्र में नवाचार के महत्व, बाज़ार की माँग बढ़ाने के लिए स्थानीय स्तर पर मछली की खपत को बढ़ावा देने की आवश्यकता, और इस क्षेत्र को मजबूत करने में निजी उद्यमों की भूमिका पर

प्रकाश डाला। श्री पवन कुमार ने मत्स्य विभाग की योजनाओं, प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत उद्यमिता मॉडल, और किसानों को अधिक लाभ दिलाने के लिए सहकारी समिति मॉडल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। डॉ. देविका पिल्लई ने प्रयोगशाला-परीक्षण से जुड़ी लागत को कम करने और कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए समूह-आधारित खेती के तरीके को अपनाने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने खारा पानी में मछली पालन की संभावनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि इसे एक सतर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाने की जरूरत है। इसके अलावा, उन्होंने किसानों को ईएचपी बीमारी के बारे में बताया और ज़ोर दिया कि अंतरराष्ट्रीय निर्यात मानकों को पूरा करने के लिए बीमारी का सही प्रबंधन और उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद बनाए रखना बहुत जरूरी है। कार्यक्रम में किसानों, हितधारकों, राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारियों और वैज्ञानिकों के बीच एक संवाद सत्र भी हुआ, जिसमें किसानों ने अपने सवाल पूछे और जमीनी स्तर पर आ रही चुनौतियों को साझा किया, जिन पर विशेषज्ञों से परामर्श किया। कार्यक्रम का समापन केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. श्रीधरन के. द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव और राष्ट्रगान के साथ हुआ।